पढ़ना है समझना
झूला

प्रथम संस्करण : अक्तूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

PD 10T NSY

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सैट)
978-81-7450-883-6

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, टुलटुल बिस्वास, मुकेश मालवीय, राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक – लतिका गुप्ता

चित्रांकन – निधि वाधवा

सज्जा तथा आवरण – निधि वाधवा

डी.टी.पी. ऑपरेटर – अर्चना गुप्ता, अंशुल गुप्ता, सीमा पाल

आभार ज्ञापन

प्रोफ़ेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर के. के. वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर मंजुला माथुर, अध्यक्ष, रीडिंग डेवलैपमेंट सैल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा; प्रोफ़ेसर फरीदा अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वानंद, रीडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा.शबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस., मुंबई; सुश्री नुज़हत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर, निदेशक, दिगंतर, जयपुर।

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, इंडस्ट्रियल एरिया, साइट-ए, मथुरा 281004 द्वारा मुद्रित।

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। *बरखा* की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। *बरखा* बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोज़मर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए '*बरखा*' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। *बरखा* पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। *बरखा* से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक *बरखा* को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 **फोन** : 011-26562708
- 108, 100 फीट रोड, हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे, बनाशंकरी III स्टेज, बेंगलुरु 560 085 **फोन** : 080-26725740
- नवजीवन ट्रस्ट भवन, डाकघर नवजीवन, अहमदाबाद 380 014 **फोन** : 079-27541446
- सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस, निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी, कोलकाता 700 114 **फोन** : 033-25530454
- सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स, मालीगाँव, गुवाहाटी 781 021 **फोन** : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : पी. राजाकुमार
मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिव कुमार
मुख्य संपादक : श्वेता उप्पल
मुख्य व्यापार अधिकारी : गौतम गांगुली

झूला
बबली
जीत

एक दिन जीत और बबली टायर से खेल रहे थे।
उनके पास एक काले रंग का चौड़ा-सा टायर था।
दोनों अपनी-अपनी डंडी से उसे चला रहे थे।

बबली बोली कि वह टायर बहुत तेज़ दौड़ाती है।
गोल-गोल दौड़ता हुआ टायर कितना अच्छा लगता है।
जीत बोला कि उसे तो झूले पर मज़ा आता है।

यह सुनकर बबली का मन झूला झूलने को करने लगा।
जीत को भी झूला झूलने की इच्छा हुई।
दोनों मिलकर झूला ढूँढ़ने लगे।
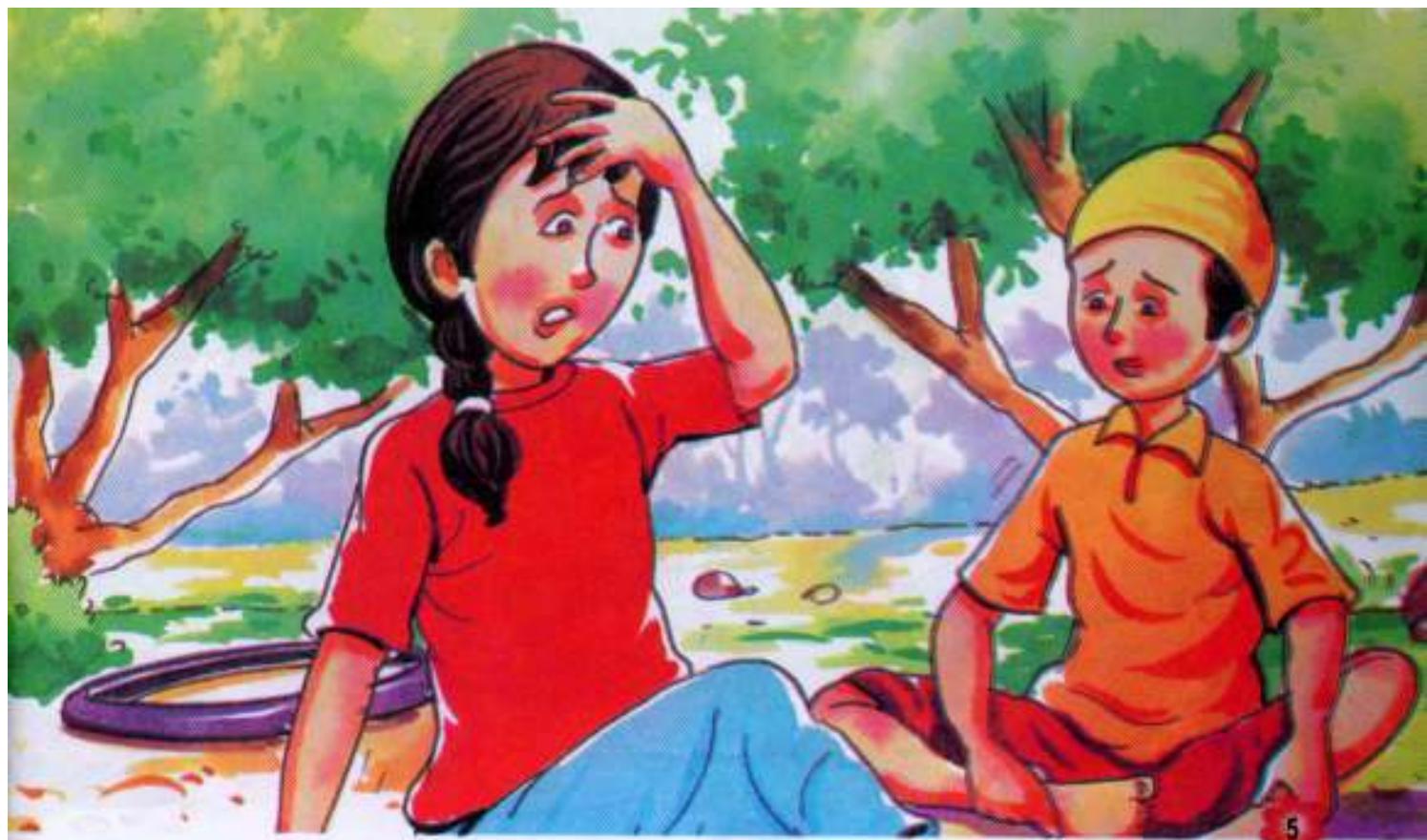
दोनों ने दूर-दूर तक झूला ढूँढ़ा।
पर झूला कहीं नहीं मिला ।
वे सोचने लगे कि क्या करें।

उस मैदान में बहुत सारे पेड़ थे।
कई पेड़ों की डालियाँ बहुत नीचे आ गई थीं।
दोनों को एक तरकीब सूझी।

जीत और बबली डाली पर लटक कर झूलने लगे।
दोनों को खूब मज़ा आया।
लेकिन वे ज़्यादा देर तक नहीं झूल पाए।

बबली के दोनों हाथ छिल गए थे।
जीत की हथेलियों में जलन हो रही थी।
दोनों हाथ झाड़कर नीचे बैठ गए।

वहाँ एक लोहे का पाइप लगा हुआ था।
बबली की नज़र उस पाइप पर पड़ी।
उसने जीत को वह पाइप दिखाया।

जीत और बबली भागकर पाइप के पास पहुँच गए।
दोनों पाइप से लटककर झूलने लगे।
दोनों को खूब मज़ा आया।

लेकिन जीत और बबली ज़्यादा देर नहीं झूल पाए।
जीत के हाथ में दर्द हो रहा था।
बबली भी हाथ पकड़कर बैठ गई।

बबली को एक और तरकीब सूझी।
वह बोली कि अपने टायर से झूला बना लेते हैं।
उसमें बैठकर झूला झूलेंगे।

जीत को यह बात पसंद आ गई।
वह बोला कि वह टायर पेड़ पर लटकाएगा।
बबली बोली की वह टायर को लटकाएगी।

बबली ने टायर अपने हाथ में ले लिया।
जीत ने उससे टायर छीनने की कोशिश की।
दोनों में छीना-झपटी होने लगी।
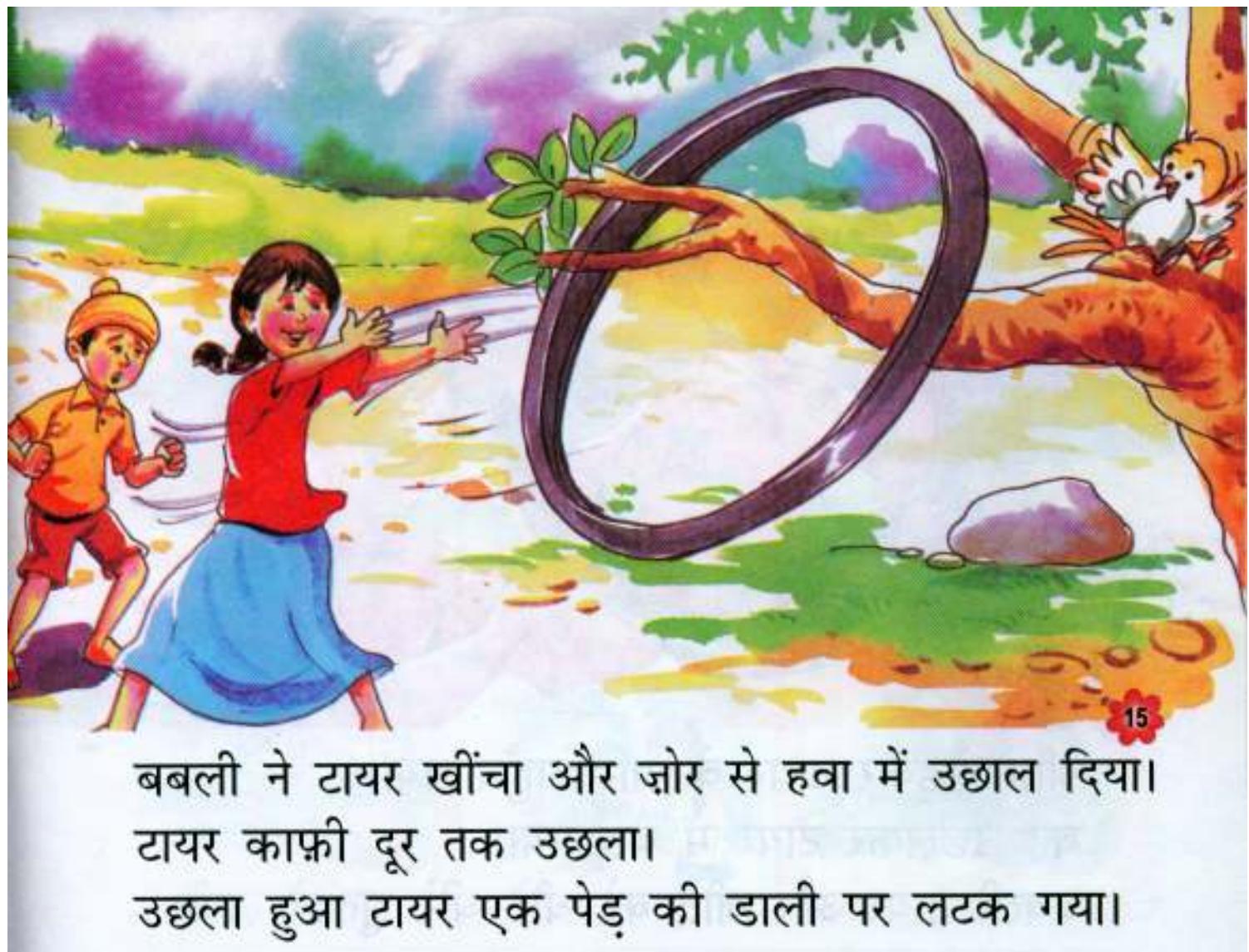
बबली ने टायर खींचा और ज़ोर से हवा में उछाल दिया।
टायर काफ़ी दूर तक उछला।
उछला हुआ टायर एक पेड़ की डाली पर लटक गया।

जीत दौड़कर टायर के पास पहुँच गया।
वह उछलकर टायर में बैठ गया।
बबली टायर और जीत को धीरे-धीरे झुलाने लगी।

2082

रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING